## मनोवैज्ञानिक मापनी विधियाँ –

→ मनोवैज्ञानिक मापन – मापन मनोविज्ञान के विकास कहे जाने के लिए अनिवार्य है। मनोवैज्ञानिक मापन से तात्पर्य व्यक्ति के मानसिक गुणों, आदतों, मनोवृत्तियों आदि के मापन से होता है। इसमें मापन की इकाई निश्चित नहीं होती है और न ही कोई वास्तविक शून्य बिंदु होता है। मनोवैज्ञानिक मापन में परिशुद्धता की कमी होती है साथ ही मापन परोक्ष रूप से किया जाता है।

## मनोवैज्ञानिक मापनी विधियाँ

मनोवैज्ञानिक मापनी विधियों का प्रयोग मनोवैज्ञानिक एवं शैक्षिक शोधों में अधिक होता है। इसमें उन उद्दीपकों का अध्ययन किया जाता है, जिसमें मनोवैज्ञानिक गुण जैसे– बुद्धि, स्मृति, तनाव, मनोवृत्ति आदि होते हैं।

Torgerson, (1958) के अनुसार – "मनोवैज्ञानिक मापनी विधि मनोवैज्ञानिक गुणों के मापन के लिए एक स्केल बनाने की प्रविधि है।"

प्रमुख मनोवैज्ञानिक मापनी विधियाँ हैं →

- कोटि क्रम विधि (Method of Rank Order)
- युग्मित तुलना विधि (Method of Pair Comparison)
- क्रमिक श्रेणियों की विधि (Method of Successive Categories)

# कोटि क्रम विधि – इस विधि को गुणवत्ता क्रम विधि (Order of merit method) भी कहा जाता है। इसका प्रतिपादन कैटल (1903) तथा स्पीयरमैन (1904) द्वारा किया गया। इस विधि में अध्ययन किये जाने वाले उद्दीपकों को एक साथ प्रयोज्य या प्रयोज्यों के सामने रख दिया जाता है और उनसे यह अनुरोध किया जाता है कि वे दिए गए उद्दीपकों को उच्चतम से न्यूनतम क्रम में कोटिबद्ध कर दें। जब सभी को कोटिबद्ध कर लिया जाता है, तो उसका सांख्यिकीय विश्लेषण करके एक निश्चित निष्कर्ष निकाल लिया जाता है।



Scanned with CamScanner

# युग्मित तुलना विधि — इस विधि का प्रतिपादन कोहेन द्वारा 1894 में प्रयोज्यों के रंग पसंदों के अध्ययन में किया गया था। बाद में इसकी वैज्ञानिक व्याख्या थर्स्टन द्वारा की गयी। इस विधि में प्रत्येक उद्दीपक को दिये गये मनोवैज्ञानिक गुणों के आधार पर अन्य सभी उद्दीपकों के साथ तुलना करके यह बतलाना होता है कि वह युग्म के किस उद्दीपक को अधिक पसंद करता है। इसमें प्रत्येक उद्दीपक एक-दूसरे के लिए मानक उद्दीपक का कार्य करता है। इस विधि में प्रयोज्य को यह अनुदेश दिया जाता है कि वह समानता का निर्णय न दे क्योंकि इसमें समानता की अनुक्रिया के विश्लेषण का कोई प्रावधान नहीं रखा गया है।

# क्रमिक श्रेणियों की विधि — इसे क्रमिक अंतराल की विधि (method of successive intervals) भी कहा जाता है। जिसका प्रतिपादन Thurstone द्वारा किया गया और बाद में Saffir (सैफर) द्वारा इसे विशेष महत्व दिया गया।

इस विधि में उद्दीपकों या कथनों जिनकी संख्या सामान्यतः 100 या उससे अधिक होती है का अध्ययन आसानी से किया जाता है। इसमें समूह के प्रत्येक व्यक्ति को इस अनुदेश के साथ सभी कथन या उद्दीपक दे दिए जाते हैं कि वे इन कथन या उद्दीपकों को दिये गये 9 बिन्दुओं या श्रेणियों में से किसी एक में जिसमें वे उचित समझते हैं, छाँट दे या रख दें। इस विधि में प्रयोग किये जाने वाली 9 श्रेणियाँ इस प्रकार हैं —

| 1 | 2 | 3 | 4 | 5 | 6 | 7 | 8 | 9 |
|---|---|---|---|---|---|---|---|---|
| A | B | C | D | E | F | G | H | I |
| प्रतिकूल (Unfavourable) | | | तटस्थ (Neutral) | | | अनुकूल (Favourable) | | |

स्पष्ट है कि इस विधि की 9 श्रेणियाँ परिमाणात्मक रूप से एक दूसरे से भिन्न होती हैं जिसकी मनोवैज्ञानिक समानता के बारे में

कोई पूर्वकल्पना नहीं की जाती है। इस विधि द्वारा प्रत्येक कथन या उद्दीपक का मापनी मूल्य (scale value) ज्ञात किया जाता है और फिर उसके आंतरिक संगति की जाँच की जाती है।

## मनोवृत्ति मापनियाँ
## (Attitude Scales)

मनोवैज्ञानिक शोधों एवं शैक्षिक शोधों में मनोवृत्ति मापनियों का प्रयोग काफी होता है। अतः उन मापनी विधियों का जानना जरूरी है जिसके आधार पर विभिन्न मनोवृत्ति मापनियों का निर्माण किया जाता है। इनमें निम्नांकित प्रमुख हैं—

- लिकर्ट मापनी विधि (Likert's Scaling Method)
- गटमैन संचयी मापनी विधि (Guttman Cumulative Scaling Method)
- थर्स्टन मापनी विधि (Thurstone's Scaling Method)
- बोगार्डस सामाजिक दूरी मापनी विधि (Bogardus Social Distance Scale Method)
- मापनी विभेद प्रविधि (Scale Discrimination Technique)

## लिकर्ट मापनी विधि (Likert Scaling Method)

मनोवृत्ति मापनी के निर्माण के लिए Rensis Likert, (1932) ने इस मापनी विधि का निर्माण किया। जिसे Bird (1940) ने संकलित रेटिंग्स विधि (Method of summated ratings) कहा है। इस विधि द्वारा मनोवृत्ति मापनी बनाने के लिए निम्नांकित स्तर हैं—

→ इस विधि मनोवृत्ति मापनी के निर्माण के लिए सबसे पहले शोधकर्ता मनोवृत्ति विषय से संबंधित कथनों को पर्याप्त संख्या में तैयार कर लेता है। इनमें से करीब आधे कथन अनुकूल मनोवृत्ति तथा आधे प्रतिकूल मनोवृत्ति दिखलाने वाले होते हैं। प्रत्येक कथन के साथ-साथ 5 बिंदु के उत्तर श्रेणियों का भी निर्माण किया जाता है, जो है—
पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत।



Scanned with CamScanner

→ इन कथनों को प्रयोज्यों के समूह को दे दिया जाता है, जो प्रत्येक कथन को इन 5-बिंदु उत्तर श्रेणियों में किसी एक श्रेणी में रखकर अपनी प्रतिक्रिया देते हैं।

→ प्रत्येक कथन पर प्रयोज्य द्वारा दी गई प्रतिक्रियाओं का अंकन किया जाता है। अनुकूल कथनों पर पूर्णतः सहमत, सहमत, अनिश्चित, असहमत तथा पूर्णतः असहमत के लिए क्रमशः 5, 4, 3, 2 तथा 1 अंक दिया जाता है तथा प्रतिकूल कथनों के लिए क्रमशः 1, 2, 3, 4 और 5 अंक दिया जाता है। प्रत्येक कथन पर प्रत्येक प्रयोज्य द्वारा दिये गये अंकों को अलग-अलग जोड़ कर कुल प्राप्तांक प्राप्त कर लिया जाता है। उच्च कुल प्राप्तांक प्रयोज्य की अनुकूल मनोवृत्ति एवं निम्न प्राप्तांक प्रतिकूल मनोवृत्ति को बतलाती है।

→ निर्माण के इस चरण में कथनों का एकांश विश्लेषण किया जाता है, जो कि एक सांख्यिकीय विधि है। इसके सहारे <u>भेदभाव</u> वाले कथनों को अन्य सामान्य कथनों से अलग कर लिया जाता है। ऐसा करने के लिए प्रत्येक कथन पर प्राप्त अंक तथा सभी कथनों पर प्राप्त अंक के बीच सहसंबंध ज्ञात किया जाता है। जिसका सहसंबंध उच्च होता है, उन कथनों को चुन लिया जाता है तथा निम्न सहसंबंध वाले कथनों को हटा दिया जाता है।

→ एकांश विश्लेषण के बाद जो एकांश या कथन अंतिम रूप से चयनित होते हैं, उसे लेकर मापनी तैयार कर ली जाती है, जिसे लिकर्ट मापनी कहा जाता है। इसमें प्रायः कथनों की संख्या लगभग 20 होती है।

Scanned with CamScanner

## लिकर्ट विधि के प्रमुख गुण एवं दोष—

### गुण

→ इस विधि का सबसे महत्वपूर्ण गुण यह है कि इसमें एकांश विश्लेषण के द्वारा भेदभाव वाले कथनों को चुनने का एक वैज्ञानिक तरीका है।

→ इसमें कथनों का चयन निर्णायकों द्वारा नहीं, बल्कि प्रयोज्यों का प्रयोग करके किया जाता है, जिससे कथनों का अंतिम चयन निर्णायकों की मनोवृत्ति के प्रभाव से बच जाता है।

→ लिकर्ट विधि द्वारा मनोवृत्ति मापनी बनाने में समय तथा धन कम लगता है तथा इसमें व्यावहारिकता का गुण भी है।

→ इसमें लचीलापन का गुण होता है, क्योंकि शोधकर्ता इसमें आवश्यकतानुसार कथनों की संख्या घटा-बढ़ा सकते हैं।

→ लिकर्ट विधि द्वारा प्राप्त आँकड़ों का क्रमबद्ध सांख्यिकीय विश्लेषण आसानी से किया जा सकता है।

### दोष

→ लिकर्ट विधि का सबसे प्रमुख दोष यह बतलाया गया है कि इस विधि में उच्च प्राप्तांक एवं निम्न प्राप्तांक का अर्थ तो अनुकूल एवं प्रतिकूल मनोवृत्ति के रूप में की गई है। परन्तु तटस्थ बिंदु पर आने वाले प्राप्तांकों की व्याख्या नहीं की गयी है। जो कि दो तरह की परिस्थितियों में संभव है— (i) एक प्रयोज्य प्रत्येक कथन पर अपनी प्रतिक्रिया अनिश्चित के रूप में देता हो या (ii) कुछ कथनों पर प्रतिक्रिया पूर्णतः सहमत तथा कुछ पर पूर्णतः असहमत के रूप में दिया हो। स्पष्ट है कि तटस्थ बिन्दु पर पहुँचने के लिए इन दोनों तरीकों का मनोवैज्ञानिक अर्थ एक समान नहीं है।

→ इस विधि द्वारा मनोवृत्ति मापते समय यह संभावना भी होती है कि प्रयोज्य सही मनोदशा को छिपाकर गलत प्रतिक्रिया करे।

→ इस विधि से व्यक्ति की मनोवृत्ति की दिशा (अनुकूल या प्रतिकूल) का तो पता चलता है, परंतु उसकी मात्रा का पता नहीं चलता है।

→ इस विधि द्वारा समान अंक पाने वाले व्यक्तियों की मनोवृत्ति एक समान हो, यह कोई जरूरी नहीं होता।

→ कुछ आलोचक मनोवैज्ञानिकों का कहना है कि इस विधि में निर्णायकों या विशेषज्ञों के निर्णय पर प्राप्तांकों का प्रयोग किया जाता है जो कि कुशल नहीं होते हैं अतः इस बात की संभावना बनी होती है कि कुछ ऐसे कथनों का संग्रह हो जाए जो सन्मुख में मनोवृत्ति मापन के लिए उपयुक्त न हों।

इन आलोचनाओं के बावजूद भी लिकर्ट विधि मनोवृत्ति मापनी बनाने के लिए ~~अपनी~~ अपनी सरलता एवं सुगमता के कारण समाज मनोवैज्ञानिकों तथा समाजशास्त्रियों के बीच काफी लोकप्रिय है।